।। ॐ श्री साईनाथाय नमः।।
।। ॐ श्री सद्‌गुरुनाथ दादाय नमः।।

श्री साईकल्प आध्यात्मिक संस्था
नई दिल्ली

श्री साई शक 44
05 जुलाई 2026

गुरुबंधु भगिनियों से,

आज हम सब भक्त हमारे प्यारे सद्‌गुरु वं. दादा जी की पुण्यतिथि मना रहे हैं। वं. दादा जी युग प्रवर्तक थे जिन्होंने समस्त विश्व को मानवता धर्म पर चलने के लिए प्रेरित किया और हम मानवों और इस विश्व के सुख, शांति, समाधान (संतोष) के लिए मानवता युग का आवाहन किया। विश्व के सभी मानव आपस में भिन्न भाव न रखते हुए मानवता धर्म को स्वीकार करें इसलिए वं. दादा जी ने दिव्य, पुण्य विभूतियों के मार्गदर्शन एवं आशीर्वाद से इस महान गुरुमार्ग की स्थापना की है।

प.पू. साईनाथ महाराज ने वं. दादा जी को बताया था ''तुम जगत को सुखी करने का प्रयत्न मत करो बल्कि लोगों को सुख प्राप्त करने का मार्ग दिखाओ''। इस मार्गदर्शन के अनुसार वं. दादा जी ने भक्तों के माध्यम विकसित किए और उन्हें दीक्षाऐं दी। 'मनुष्य अपने अज्ञान के कारण दुखी है इसके लिए उन्हें ज्ञानी करना आवश्यक है' इसके लिए वं. दादा जी ने 8 साधना सम्मेलन लिए और भक्तों को जीवन विषयक ज्ञान दिया जिससे वे न केवल इस जन्म में बल्कि आने वाले अनेक जन्मों के लिए सुख, शांति और समाधानी जीवन का प्रबंध कर सके। उन्होंने प्रेम से हम भक्तों को समय–समय पर अनेक विषयों पर मार्गदर्शन किया। एक बार वं. दादा जी ने हम गुरुभक्तों को तीर्थक्षेत्रों और मंदिरों में क्या मांगना चाहिए इसका मार्गदर्शन किया, वह इस प्रकार है –

''अब तक आप आदत के अनुसार अपनी प्रापंचिक अड़चनों के निवारण के लिए परमेश्वर से मांगा करते है परन्तु गुरुमार्गी होने के बाद अब आगे से आपको कुछ और मांगना है। आप भक्त अज्ञान से अवांछित प्रार्थनाऐं करते है। भविष्य में किसी भी तीर्थक्षेत्र में दर्शन के लिए जाने पर आप गुरुभक्तों ने भगवान से क्या इष्ट मांगना है यह इस प्रकार होना चाहिए.

1. आज जो आप तीर्थक्षेत्र जाने के लिए प्रवृत्त हुए है वह आपके माता–पिता के आप पर किए हुए अच्छे संस्कारों की वजह से है इसलिए पहले यह मांगे कि आगे आने वाले जन्म भी ऐसे ही माता–पिता के परिवार में मिलें।

2. पाँच महाभूत तत्वों से हमारा शरीर बना है। इन पाँच महाभूत तत्वों के जिस प्रमाण में आज हमें यह जन्म मिला है उसी प्रमाण के शरीर में या इससे अच्छे प्रमाण में आगे आने वाले जन्म भी मिले जिससे प्रत्येक जन्म में हमसे गुरु सेवा, साधना और उपासना ऐसे ही होती रहे।
3. जिस श्रेष्ठ गुरुतत्व का लाभ आज हमें इस जन्म में मिला है वही गुरुतत्व का आशीर्वाद हमें प्रत्येक जन्म में मिले।

ऐसी प्रार्थना आगे से आप गुरुभक्तों ने करनी है।''

यह मार्गदर्शन आज के समय में भी उतना ही प्रासंगिक है। वं. दादा जी के चरणों में आज हम यही प्रार्थना करते है कि अपने शेष जीवन में हम सभी उन्होंने स्थापित किए हुए गुरुमार्ग चर चलते हुए आने वाली पीढ़ियों को भी इसमें जोड़ सकें और अपने इस जीवन का सार्थक करें जिससे हमारे प्यारे वं. दादा जी और पुण्य विभूतियाँ हमसे संतुष्ट हों और हमें अनेक जन्मों तक अपनी सेवा का अखंड आशीर्वाद दें।

।। शुभम् भवतु।।